



## श्रेणी: दिव्य दया चैपल, (नागरिकता साहित्य)



### पाठ: 3 पंक्ति की कविता: मुहबाला और तारा

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर इन दो शब्दों का प्रयोग करके दीजिए:

(1) वर्तमान राजनीतिक दल की स्थापना 19वीं शताब्दी में हुई थी? इसकी स्थापना का वर्ष भी बताइए।

वर्तमान राजनीतिक दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना उन्नीसवीं शताब्दी में हुई थी। इसकी स्थापना 1885 में हुई थी।  
हाँ।

(2) संविधान में किन दो संशोधनों ने दलबदल की प्रथा पर रोक लगा दी?

संविधान के 52वें और 91वें संशोधन के माध्यम से दलबदल की बुरी प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

(3) किस वर्ष, किस युद्ध के दौरान, आली पार्टी ने अपना राजनीतिक प्रतिनिधित्व बदल दिया?

उत्तराखंड-अकाली दल ने 1996 में मोगा सम्मेलन के दौरान अपने राजनीतिक प्रतिनिधित्व की प्रकृति बदल दी।

इसलिए, गैर-सिखों का प्रतिनिधित्व भी इसमें शामिल किया गया।

(4) आम गण परिषद की स्थापना किस नेता ने की?

उत्तर: एआईएम गण परिषद की स्थापना 1985 में छात्र नेता प्रफुल कुमार महंत के नेतृत्व में हुई थी।

(5) किसी छात्र दबाव समूह का नाम लिखिए।

उत्तर-भारतीय राष्ट्रीय छात्र संघ

(6) निम्नलिखित में से कौन सा श्रमिकों से संबंधित नहीं है?

(i) इंटक

(ii) एटक

(iii) एनएसयूआई

(iv) एचएमएस

उत्तर- (iii) एनएसयूआई

(7) निम्नलिखित चार में से कौन सी दवा सामान्यतः प्रयोग नहीं की जाती है?

(i) रेडियो

(ii) समाचार पत्र

(iii) टेलीविजन

(iv) टेलीफोन

उत्तर: (iv) टेलीफोन

(8) कौन सा शब्द वैध दबाव शब्द नहीं है?

(i) संघ लोक सेवा आयोग (ii) कर्मचारी संघ

(iii) चिकित्सा परिषद

(iv) बार काउंसिल

उत्तर: (i) लोक सेवा आयोग

(9) निम्नलिखित में से कौन अब देश का मुख्यमंत्री नहीं है?

(i) ओम प्रकाश चौटाला

(ii) रुबीना मुफ्ती

(iii) प्रफुल्ल कुमार महंत

(iv) जानकी रामचंद्रन

उत्तर: (ii) रुबीना मुफ्ती

(10) इनमें से कौन सी महिला भारत में पहली भारतीय मुख्यमंत्री नहीं बनी?

(i) रसजिंदर कौर भीथल

(ii) राबड़ी देवी

(iii) कॉन्शियस स्क्रिप्लानी

(iv) जे. जयालता

उत्तर: (i) राजिंदर कौर भित्तल

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर क्रम से दीजिए -

(1) बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के संस्थापक कौन हैं और पार्टी का चुनावी नारा क्या है?

उत्तर-बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के संस्थापक कांशीराम नाथ पार्टी का चुनाव चिन्ह है।

(2) पंजाब विधानसभा में कितनी सीटें हैं और लोकसभा में कितनी सीटें हैं?

उत्तरी पंजाब में विधान सभा की 117 और लोकसभा की 13 सीटें हैं।

(3) खेलों में प्रतियोगिताएं किन चार मुख्य मैदानों पर होती हैं?

उत्तर-क्षेत्र स्तर, जिला स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर।

(4) भारत में गठबंधन सरकारों के मुखिया रहे दो प्रधानमंत्रियों के नाम लिखिए।

उत्तर-एच.डी. देवेगौड़ा और इंद्र कुमार गुजराल

(5) कांग्रेस पार्टी के सामने सबसे महत्वपूर्ण और सबसे कम महत्वपूर्ण मुद्दे क्या हैं?

उत्तर: कांग्रेस पार्टी ने 2014 के लोकसभा चुनावों में न्यूनतम 45 सीटें जीती थीं।

(6) पवार, अनवर और सिंह ने किस वर्ष कौन सी नई राजनीतिक पार्टी बनाई?

उत्तर: पवार, अनवर और निग्मा ने 1999 में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी नामक एक नई राजनीतिक पार्टी बनाई।

पार्टी का गठन किया गया।

(7) खनिज संसाधनों से समृद्ध बिहार और मध्य प्रदेश को विभाजित करके कौन से राज्य बनाए गए?

उत्तर: महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के विभाजन से बने नए राज्य हैं: 1. झारखंड - 15 नवंबर 2000 को

महाराष्ट्र का विभाजन हुआ और झारखंड का गठन हुआ। यह राज्य लौह अयस्क, कोयला, बॉक्साइट, तांबा,

यूरेनियम रेडियोधर्मी पदार्थों से समृद्ध है।

2. छत्तीसगढ़ - छत्तीसगढ़ का गठन 1 नवंबर 2000 को मध्य प्रदेश का विभाजन करके किया गया था। यह राज्य कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट और अन्य खनिजों से भी समृद्ध है।

आषाढ़ खसाना या शिक्षा से भरा हुआ है।

(8) भाषा और सांस्कृतिक श्रेणियाँ एक दूसरे से किस प्रकार संबंधित हैं?

उत्तर: भाषा और सांस्कृतिक वर्ग कई मायनों में लोकतंत्र के लिए हानिकारक हैं -

1. ये वर्ग सरकार के काम में बाधा डालकर अपना विरोध प्रदर्शित करते हैं।

2. ये श्रेणियां सरकार के कामकाज, नीति-निर्माण और कानून-निर्माण गतिविधियों को काफी हद तक प्रभावित करती हैं।

3. इन समूहों के सदस्य अपनी और संगीत संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा भी करते हैं।

(ग) इन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए -

(1) भारत में राजनीतिक दलों की आवश्यकता क्यों है और इन दलों के कार्य क्या हैं?

उत्तर: राजनीतिक दल एक लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था की आधारभूत संस्थाएँ हैं। राजनीतिक दल या राजनीतिक दल लोगों के समान समूह होते हैं जो कुछ निश्चित सिद्धांतों पर सहमत होते हैं। वे संवैधानिक तरीकों से इन सिद्धांतों पर आधारित एक राजनीतिक दल बनाते हैं और एक ऐसी सरकार बनाते हैं जो लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर काम करती है। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में, यदि दलों का अस्तित्व नहीं है, तो चुनावों में स्वतंत्र व्यक्ति चुने जाएँगे और उनके लिए

एक दिन में बहुमत से एक साथ आना मुश्किल होगा क्योंकि उनके विचारों में बहुत विविधता होगी जो राज्य की एकता के लिए सीधा खतरा होगा। खासकर उन समाजों में जहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों और पंथों के लोग रहते हैं, राजनीतिक दलों का महत्व और भी बढ़ जाता है। राजनीतिक दल समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को एक मंच पर लाने का प्रयास करते हैं, जिससे समाज में एकता बनी रहती है। समाज में एकता ही राष्ट्रीय एकता का आधार बनती है। इसके लिए भारत में राजनीतिक दलों की आवश्यकता है।

दलों के कार्य- राजनीतिक दल सामान्यतः निम्नलिखित कार्य करते हैं-

- लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों का मुख्य कार्य लोगों को संगठित करना है।
- राजनीतिक दल अपनी राजनीतिक गतिविधियों के माध्यम से देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करते हैं।
- वे समस्याओं के बारे में जागरूकता पैदा करते हैं।
- लोगों की समस्याओं और इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए, राजनीतिक दल ऐसी नीतियाँ बनाते हैं जो जनता की जरूरतों और आकांक्षाओं को संबोधित करती हैं और इस प्रकार उन जरूरतों को पूरा करती हैं।
- राजनीतिक दल लोगों को भविष्य के लिए राजनीतिक नेता और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- राजनेता जनता के लिए एक प्रशिक्षण मंच भी उपलब्ध कराते हैं।
- राजनीतिक व्यवस्था में, राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं और सरकार बनाते हैं। □ राजनीतिक दल या राजनीतिक दल सरकार और जनता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं।

(2) दलीय प्रणाली की मुख्य कमियाँ क्या हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर: किसी राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों की योजना राजनीतिक दलों की संख्या और प्रभुत्व पर निर्भर करती है।

राजनीतिक दलीय व्यवस्था की निम्नलिखित योजनाओं का मुख्य रूप से उल्लेख किया जा सकता है - 2.

एकदलीय व्यवस्था 3. बहुदलीय व्यवस्था द्विदलीय व्यवस्था 1.

1. एकदलीय प्रणाली - इस प्रणाली में, केवल एक ही राजनीतिक दल सरकार बनाता है। किसी अन्य दल को चुनाव लड़ने या सरकार बनाने का अधिकार नहीं होता। उदाहरण के लिए, चीन में एकदलीय प्रणाली है। वहाँ, केवल कम्युनिस्ट पार्टी ही सत्ता में होती है और किसी अन्य दल को सरकार बनाने का अधिकार नहीं होता।

2. द्विदलीय प्रणाली - इस प्रणाली में मुख्यतः दो दल होते हैं जो बारी-बारी से सरकार बनाते हैं। अन्य छोटी पार्टियाँ भी हो सकती हैं, लेकिन उनकी भूमिका महत्वपूर्ण नहीं होती। उदाहरण के लिए, अमेरिका में दो मुख्य दल हैं - डेमोक्रेटिक पार्टी और रिपब्लिकन पार्टी।

3. बहुदलीय व्यवस्था - इस व्यवस्था में कई राजनीतिक दल होते हैं। चुनाव के बाद, एक ही पार्टी या गठबंधन सरकार बनाती है। यह व्यवस्था विभिन्न विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण के लिए, भारत में कई राजनीतिक दल हैं। जैसे भाजपा (भारतीय जनता पार्टी), कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी और बहुजन समाज पार्टी आदि। ये दल चुनाव में भाग लेते हैं और सरकार बनाते हैं। कभी-कभी ये गठबंधन भी बनाते हैं।

(3) दलीय प्रणाली की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: भारतीय दलीय प्रणाली की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. बहुदलीय प्रणाली - भारत में बहुदलीय प्रणाली प्रचलित है। वर्तमान में, लगभग 50 राष्ट्रीय दल हैं।  
और क्षेत्रीय पार्टियाँ भी हैं।
2. एक दलीय (एकल दलीय प्रणाली) - भारतीय दलीय प्रणाली के इतिहास से पता चलता है कि यद्यपि भारत में अनेक राजनीतिक दल सक्रिय हैं, फिर भी उनमें एक दल का ही प्रभुत्व रहा है। 1977  
और 1989 के चुनावों को छोड़कर, कांग्रेस पार्टी 1952 से 1996 तक केंद्र में सरकारें बनाती रही है। अब 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में पूर्ण एकाधिकार की स्थिति पैदा हो गई है। एनडीए ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई है। हालाँकि, 2024 में एनडीए फिर से गठबंधन करके ही केंद्र में सरकार बना पाएगा।
3. जाति और धर्म पर आधारित दलों का अस्तित्व - भारतीय राजनीति के इतिहास से स्पष्ट है कि भारत में जाति और धर्म के आधार पर पार्टियाँ बनी हैं। उदाहरण के लिए, हिंदू महाभारत, शाश्वत जीवन, मुस्लिम लीग, मुस्लिम मजलिस-ए-असद एक धर्म आधारित राजनीतिक पार्टी है।
4. क्षेत्रीय दलों का महत्व - भारत विविधताओं वाला देश है और इसके नागरिक सांस्कृतिक परंपराओं और रीति-रिवाजों से प्रभावित हैं।  
आधार पर ये सभी मतभेद व्यापक पैमाने पर हैं। राष्ट्रीय दलों के साथ-साथ, भारत क्षेत्रीय ज़रूरतों पर भी ध्यान केंद्रित करता है।  
भाषा और क्षेत्र के आधार पर अपनी अलग पहचान बनाने की नागरिकों की इच्छा के कारण, 1960 के दशक में कई क्षेत्रीय दलों का गठन हुआ। जैसे आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम पार्टी,  
दरसअल मुनेत्र कड़गम, पंजाब में रोमन अकाली दल, आम आदमी पार्टी में आम आदमी पार्टी और जम्मू-कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस।
5. दलों के बीच दलबदल और विभाजन - दलों के बीच दलबदल और विभाजन की प्रवृत्ति लगभग पूरे भारत में देखी जा सकती है।  
भारतीय संविधान 52वें और 91वें संविधान संशोधनों के माध्यम से दलबदल की बुराई पर रोक लगाता है। लेकिन भारत में भी, राजनीतिक दल विभाजित हैं और दलबदल की बुराई किसी न किसी रूप में प्रचलित है।
6. सशक्त विपक्षी दल का अभाव- भारतीय लोकतंत्र की सफलता काफी हद तक सशक्त विपक्षी दल के अस्तित्व पर निर्भर करती है क्योंकि एक सशक्त विपक्षी दल सत्तारूढ़ दल पर अंकुश लगाने का काम करता है और इस प्रकार जनता के प्रति कानून का शासन सुनिश्चित करता है, लेकिन भारत में विपक्षी दल का स्वरूप बहुदलीय है। इन दलों में एकता के अभाव के कारण ही एक सशक्त विपक्षी दल कभी अस्तित्व में नहीं आ पाया है।

(4) भारत की दो राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों के प्रदर्शन पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर- 1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस- इस पार्टी की स्थापना 1885 में औपनिवेशिक काल के दौरान जनता की शिकायतों को व्यक्त करने के एक मंच के रूप में हुई थी। इसके पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी थे। इसकी वर्तमान अध्यक्ष श्रीमती भोसला गांधी हैं, जो पार्टी की सबसे लंबे समय तक अध्यक्ष रहीं हैं। इस पार्टी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

आज़ादी के बाद से पार्टी ने कई बार केंद्र और राज्यों में सरकारें बनाई हैं।

पार्टी 1989 से भारतीय राजनीति में छाई हुई है, और अभी दो लोकसभा चुनाव बाकी हैं। इसकी वर्तमान चुनावी जीत एक ज़बरदस्त जीत है। पार्टी को समाज के अधिकांश वर्गों का समर्थन प्राप्त है। 1991, 1996, 2004 और 2009 में, पार्टी ने संयुक्त प्रगतिशील मोर्चा का नेतृत्व किया और केंद्र में गठबंधन सरकारें बनाई, लेकिन 2014 के लोकसभा चुनावों में पार्टी केवल 45 सीटें ही जीत पाई। यह लोकसभा में इसका सबसे खराब प्रदर्शन है और 2019 में, कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा में 52 सीटें जीतीं।

2. भारतीय जनता पार्टी - भारतीय जनता पार्टी जंग की एक शाखा है। जंग की स्थापना 1952 में हुई थी।

पार्टी का पुनर्गठन किया गया और 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। भारतीय जनता पार्टी, इलिनॉय।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की राजनीतिक शाखा मानी जाती है। अटल बिहारी वाजपेयी इसके पहले अध्यक्ष बनाए गए थे। इस पार्टी के वर्तमान अध्यक्ष जगत प्रकाश निधा हैं। इस पार्टी ने 1996, 1998 और 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में केंद्र में गठबंधन सरकारें बनाई हैं। इनमें से केवल 1999 में बनी सरकार ने ही पूरे पाँच साल का कार्यकाल पूरा किया। 2014 के 16वें लोकसभा चुनाव और 2019 के आम चुनाव में इस पार्टी ने भारी जीत हासिल की और दोनों बार पूर्ण बहुमत हासिल किया। इस पार्टी का वर्तमान चुनाव चिन्ह कमल का फूल है।

(5) भारत में किन्हीं दो क्षेत्रीय या प्रांतीय स्तर की पार्टियों के प्रदर्शन पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर- 1. शिरोमणि अकाली दल- यह पार्टी आज़ादी से पहले अस्तित्व में आई थी। इसकी स्थापना 1920 में गुरुद्वारा चूड़धार शहर में हुई थी और 1924-25 से चूड़धार शहर से जुड़े कार्यकर्ता सिख समुदाय के राजनीतिक अधिकारों और पंजाब के कल्याण के लिए राजनीतिक संघर्ष में रुचि लेने लगे थे, तभी पार्टी के अपने संघर्ष के कारण गुरुद्वारा प्रबंधन शिरोमणि कमेटी के हाथों में आ गया। इस पार्टी ने पंजाब की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1966 में पंजाबी राज्य की स्थापना से पहले, अकाली दल ने अन्य दलों की मदद से राजनीति में पैर जमाए। लेकिन 1966 के बाद, इस पार्टी ने पंजाब में कई बार अपनी सरकार का स्वरूप भी बदला।

यह पार्टी केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सहयोगी है और राज्यों को सत्ता के हस्तांतरण की वकालत करती है। शिरोमणि अकाली दल 1998 से अपने संविधान के अनुसार सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाला एक राजनीतिक दल रहा है और 1996 के मोगा सम्मेलन में पार्टी ने गैर-सिखों को प्रतिनिधित्व देने के लिए अपने संविधान में संशोधन किया। अब यह पार्टी पंजाब और पंजाबियत के हितों की रक्षक होने का दावा करती है। इसके वर्तमान अध्यक्ष श्री मुखबीर सिंह बादल हैं।

2. तेलुगु देशम पार्टी - इस पार्टी की स्थापना 1982 में आंध्र प्रदेश में हुई थी। इस पार्टी ने आंध्र प्रदेश में कई बार सरकार बनाई है। तेलुगु देशम पार्टी को तेलुगु फिल्म निर्देशक और अभिनेता एन.टी. रामाराव का करिश्मा भी हासिल था, जिन्होंने पार्टी की स्थापना के मात्र नौ महीने बाद ही आंध्र प्रदेश में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनाई थी। रामाराव ने खुद को आंध्र प्रदेश और त्रिची क्षेत्र के गरीब तेलुगु लोगों के एक समर्थक के रूप में स्थापित किया। 1995 में पार्टी का विभाजन हो गया और एन. चंद्रबाबू नायडू पार्टी प्रमुख बने। 1996 में श्री राव के निधन के बाद वे एक वामपंथी नेता के रूप में उभरे, लेकिन अब यह पार्टी भारतीय जनता पार्टी का गढ़ बन गई है। 18वीं लोकसभा में पार्टी के 16 सदस्य हैं।

(6) भारत में दाब वाहिकाओं के शुल्क की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: दबाव समूहों का कार्य इस प्रकार है-

1. जनमत को प्रभावित करना - दबाव समूह न केवल अपने सदस्यों के लाभ के लिए सरकारी नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं, बल्कि जनमत को भी अपने हितों के पक्ष में करने का प्रयास करते हैं।
2. छात्रों का सशक्तिकरण - छात्रों की युवा शक्ति ऐसे दबावों का मुकाबला करने के लिए एक सशक्त शक्ति के रूप में उभरती है। इसके लिए छात्रों को सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक रूप से जागरूक होना चाहिए।  
ऐसा माना जाता है कि इसका अध्ययन करके युवा छात्रों को दबाव समूहों की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है।
3. दान, संग्रह और भुगतान - कई दबाव समूह राजनीतिक और प्रशासनिक कार्यों में संलग्न संगठनों को दान देकर अपने हितों की पूर्ति करते हैं और इस प्रकार सरकारी नीतियों को अपने लाभ के लिए विकृत करते हैं। इसलिए, दान संग्रह और भुगतान दबाव समूहों का मुख्य कार्य बन जाता है।
4. चुनाव के दौरान वित्तीय सहायता प्रदान करना - दबाव समूह स्वयं सीधे तौर पर चुनाव नहीं लड़ते हैं, लेकिन सरकार में अपने हितों की रक्षा के लिए चुनावों में उम्मीदवारों की मदद करके, वे भविष्य में उनसे अपने हितों की पूर्ति करवाने के लिए आधार तैयार करते हैं।
5. विधायी समितियों को सूचना देना - दबाव समूहों के समूह भी होते हैं जो विधायी समितियों को सूचना और सहायता प्रदान करते हैं। विधायी समितियों की स्थापना सरकार और विधायिका की कानून बनाने की शक्तियों को स्पष्ट करने के उद्देश्य से की जाती है।
6. न्यायालयीन कार्यवाही - सरकारों द्वारा असंवैधानिक तरीके से बनाए गए नियम, जिन्हें कानून के नाम पर संरक्षित किया जाता है वे अदालत पर जमानत देने के लिए दबाव बनाने हेतु अदालती कार्यवाही का भी सहारा लेते हैं।
7. हड़तालें और प्रदर्शनों आदि का प्रयोग - दबाव समूह अपने-अपने संगठनों के कानूनों, निर्णयों और गतिविधियों के प्रति अपना विरोध दर्ज कराने के लिए हड़तालें, प्रदर्शन और विरोध प्रदर्शन करते हैं।
8. दबाव समूहों का समाचार पत्रों, सोशल मीडिया और अन्य मीडिया आउटलेट्स के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध होता है, क्योंकि उन्हें न केवल जनमत के बारे में जानकारी प्राप्त करनी होती है, बल्कि अपने घटकों को शिक्षित करने के लिए जनमत का निर्माण भी करना होता है।

(ख) नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़िए और उसके बाद दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

भारत में 1951 में आम चुनाव शुरू होने के बाद कांग्रेस पार्टी की सरकारें बनती रहीं। पंडित जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री और इंदिरा गांधी विधिवत रूप से प्रधानमंत्री चुने गए जबकि सुखबीर सिंह बादल दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री बने। इंदिरा गांधी ने अपनी राजनीतिक हैसियत बनाए रखने के लिए 1975 में पूरे देश में आपातकाल लागू कर दिया और जनता तथा विपक्षी राजनीतिक नेताओं पर अत्याचार किए और 1977 के आम चुनावों के बाद मोरारजी देसाई के नेतृत्व में पहली गैर-कांग्रेसी, जनता पार्टी सरकार बनी। मोरारजी देसाई पहले कांग्रेस पार्टी के सदस्य और प्रधानमंत्री पद के दावेदार थे, लेकिन पदभार ग्रहण करने के बाद उन्होंने जनता पार्टी के नेता के रूप में शपथ ली। वे प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने वाले पहले गुजराती नेता थे। इस सरकार ने सरकारी नौकरियों में सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन को बढ़ावा दिया।

आरक्षण प्रदान करके उन्हें सामान्य वर्ग के बराबर लाने की इच्छा से जनवरी, 1979 में संबद्ध प्रधान मंडल का नेतृत्व गठित किया गया।

आयोग का गठन किया गया जिसने दिसंबर 1980 में अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपी। लेकिन तब तक इंदिरा गांधी दोबारा प्रधानमंत्री बन चुकी थीं और रिपोर्ट पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। दिसंबर 1984 में राजीव गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के बाद, दिसंबर 1989 में स्वावलंबन प्रताप सिंह के नेतृत्व में एक गैर-कांग्रेसी सरकार बनी। 1977 की तरह, यह सरकार भी कई दलों का गठबंधन थी। इस सरकार का मंत्रिमंडल

हालाँकि इस बदलाव में बहुत बड़ा अंतर देखने को मिला, लेकिन राष्ट्रीय मोर्चा की इस सरकार को वाम मोर्चा और भारतीय जनता पार्टी का भी समर्थन प्राप्त था। जल्द ही वाम मोर्चा और वाम मोर्चा सरकार और भारतीय जनता पार्टी पर सवाल उठाने लगे।

राम मंदिर के लिए रथ यात्रा की तेज़ गति के अलावा, 1990 में स्व. स्वा. प्रताप सिंह ने मंडल आयोग की सिफारिशों को तुरंत लागू किया और एक ऐसी योजना शुरू की जिसके ज़रिए अन्य पिछड़ा वर्ग को 27% आरक्षण दिया गया। जैसे ही यह लागू हुआ, सामान्य वर्ग ने इसका कड़ा विरोध किया। यह लागू तो हो गया, लेकिन स्व. स्वा. प्रताप सिंह की सरकार गिर गई और चंद्रशेखर अंतरिम प्रधानमंत्री के रूप में सत्ता में आए। इससे पहले, चौधरी चरण सिंह भी 1977 में कुछ समय के लिए अंतरिम प्रधानमंत्री रहे थे, लेकिन अब भारत की केंद्र सरकार अस्थिर हो चुकी है।

निम्नलिखित सवालों का जवाब दें:

(1) दो गुजराती नेताओं के नाम लिखिए जो भारत के प्रधानमंत्री रहे हैं।

उत्तर - मोरारजी देवा और नरेंद्र दामोदर मोदी

(2) मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू होने के बाद अनुसूचित जाति से जुड़े दलों ने कोई प्रतिक्रिया क्यों नहीं दिखाई?

उत्तर: अनुसूचित जातियां पहले से ही आरक्षण का लाभ उठा रही थीं, इसलिए उन्होंने मंडल आयोग के कार्यान्वयन के समर्थन में कोई प्रतिरोध या प्रतिक्रिया नहीं दिखाई।

(3) ऐसे कई नेताओं के नाम लिखिए जो अल्पकालिक या स्थायी प्रधानमंत्री रहे।

उत्तर: गुलज़ारी लाल, चौधरी चरण सिंह, चन्द्रशेखर

(4) यदि राष्ट्रपति की नियुक्ति मंडल आयोग द्वारा की जाती है तो भारत का राष्ट्रपति कौन है?

उत्तर: साधानी जैल सिंह

(5) भारत की पहली दो गैर-राजनीतिक सरकारें किस वर्ष स्थापित हुईं?

उत्तर: 1977 में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी और 1989 में स्वावनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोर्चा।

**योगदान:** हर्दसविंदर सिंह (राज्य सचिव, सामाजिक विज्ञान) AVERT पंजाब,  
रंजीत कौर (लेक्चरर इस्तिह) बी.एससी. छीना बेट, गुरदासपुर और  
मनदीप कौर (एम.एस.स्मिन्ग) एम.के.एम.एम. दाखा लुसधाना.